चिंतन के क्षण

अरे जिज्ञासुओं! तुम निराश क्यों होते हो। अपनी आँखों के बन्धन को उतार डालो और देखो, अज्ञान के आवरण को उठाओ और स्पष्टतः देखो कि आनन्द तुम्हारे भीतर डेरा डाले बैठा है। **प्रस्तुति - डॉ. विजयवीर विद्यालंकार**

एक ही रास्ता

डेली हिन्दी मिलाप मंगलवार, 7 फरवरी, 2011

आज का विचार

जब आप किसी चीज के पीछे भागना बंद करते हैं, तब उस चीज को प्राप्त करते हैं जिसके पीछे भाग रहे थे।

- श्री रमेशजी जैन

तिथि विशेष

माघी पूर्णिमा पर
तीर्थ-स्नान व दान का अक्षय फल

पुराणों में माघ मास में स्नान, व्रत, तपस्या, धार्मिक अनुष्ठान, जप, कथा, कीर्तन, भजन-ध्यान व दान का विशेष फल बताया गया है। वैसे तो इस मास की प्रत्येक तिथि पुण्य पर्व मानी गई है, पर माघ मास की पूर्णिमा को विशेष महत्व दिया गया है। इस मास की पूर्णिमा तिथि पर धार्मिक स्थलों में स्नान-दान का अक्षय फल साधक को प्राप्त होता है। गंगा, पुष्कर, प्रयागराज त्रिवेणी संगम में इस दिन स्नान-दान, धार्मिक अनुष्ठान, गोदान, वस्त्र, भूमि-दान एवं यज्ञ का विशेष महत्व है।

त्रिवेणी संगम पर एक मास तक कल्पवास करने वालों को लिए यह पर्व विशेष महत्व रखता है। माघ मास का कल्पवास माघी पूर्णिमा को पूर्ण हो जाता है। कल्पवास करने वाले इस पुण्यतिथि को प्रातःकाल सूर्योदय से पहले उठकर गंगा स्नान, माता जी की पूजा-आरती व ध्यान करते हैं। नित्य नैमित्तिक क्रियाओं से निवृत होकर साधु-सन्तों, मठाधीशों, जगद्गुरुओं, आचार्यों व सन्यासियों को भोजन कराकर फिर स्वयं भोजन करते हैं और कल्पवास के लिए रखी गई खाने-पीने की जो भी वस्तुएँ बचती हैं, उन्हें दान कर देते हैं और गंगाजी की रेणुका का कुछ प्रसाद, रोली एवं रक्षासूत्र तथा गंगाजल लेकर, गंगा माता के दरबार में पुनः वापस आने के लिए प्रार्थना करके अपने-अपने घरों को जाते हैं।

जिसने इन्द्रिय समुदाय को वश में कर लिया, वह मनुष्य जहाँ-जहाँ निवास करता है, वहीं-वहीं उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ प्रस्तुत हैं। जो ज्ञान से पवित्र, ध्यान रूपी जल से परिपूर्ण और राग-द्वेष रूपी मल को धो देने वाला है, ऐसे मानस तीर्थ में स्नान जो करता है, वह परमगति को प्राप्त होता है।

व्रत की विधि

माघी पूर्णिमा को कुछ धार्मिक कार्य सम्पन्न करने का भी शास्त्रों में उल्लेख आया है- प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म एवं स्नानादि से निवृत्त होकर भगवन विष्णु का सविधि षोडषोपचार से अभिषेक, श्रृंगार, पूजा-अर्चना आदि करें। फिर पितरों का तर्पण श्राद्ध करें। असमर्थों को भोजन, वस्त्र तथा आश्रय देवें और इन वस्तुओं का दान भी करें- तिल, कम्बल, कपास, गुड़, घी, मोदक, जूते, फल, अन्न, चांदी-स्वर्ण, अन्न, वस्त्र, जल, दक्षिणा आदि। दिन भर उपवास रखकर विद्वान सुयोग्य ब्राह्मण, पुरोहित व आचार्य को भोजन करवा कर आशीर्वाद लेवें, फिर सत्संग, कथा, भजन-कीर्तन करके दूसरे दिन पारणा करें।

माघ शुक्ल पूर्णिमा को यदि शनि मेष राशि पर, गुरु और चन्द्रमा सिंह राशि पर तथा सूर्य श्रवण नक्षत्र पर हो, तो महामाघी पूर्णिमा का योग होता है। यह पुण्य पर्व तिथि स्नान दान के लिए अक्षय फलदायिनी मानी गई है।

माघी पूर्णिमा में पूजा की विधि-

माघ पूर्णिमा के अवसर पर भगवान सत्यनारायण जी की कथा की जाती है। भगवान विष्णु की पूजा में केले के पत्ते व फल, पंचामृत, सुपारी, पान, तिल, मोली, रोली, कुमकुम, दूर्वा का उपयोग किया जाता है। सत्यनारायण की पूजा के लिए दूध, शहद, केला, गंगाजल, तुलसी पत्ता, मेवा मिलाकर पंचामृत तैयार किया जाता है। इसके साथ ही साथ आटे को भून कर, उसमें चीनी मिलाकर चूरमे का प्रसाद बनाया जाता है और इस का भोग लगता है। सत्यनारायण की कथा के बाद उनका पूजन होता है। इसके बाद देवी लक्ष्मी, महादेव और ब्रह्मा जी की आरती की जाती है और चरणामृत लेकर प्रसाद सभी को दिया जाता है।

माघ मास को बत्तीसी पूर्णिमा व्रत भी कहते हैं।

स्नान के लिए मुख्य तीर्थ

तीर्थराज प्रयाग विख्यात तीर्थ है। यह सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - इन चारों पदार्थों को देने वाला है। इसके अलावा और अन्य तीर्थ नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, उज्जैन, सरयू, यमुना, द्वारका, सरस्वती, अमरावती और समुद्र का संगम व गंगासागर, कांची, त्रयम्बक तीर्थ, सप्त गोदावरी तट, कालंजर, प्रभास, बद्रीकाश्रम महालय, ओंकार क्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ पुरी, गोकर्ण, भृगुकर्ण, पुष्कर, कावेरी, कृष्णावेणी, नर्मदा तथा वेगवती आदि नदी - ये सभी तीर्थ भी स्नान के लिए मुख्य हैं। गया नामक तीर्थ पितरों की तृप्ति व शान्ति के लिए मुख्य है।

मानस तीर्थ में स्नान का फल

मानस तीर्थ में स्नान करने पर भी मनुष्य परमगति को प्राप्त होता है। सत्यतीर्थ, क्षमातीर्थ, इन्द्रिय निग्रह तीर्थ, सर्वभूतदया तीर्थ, सरलता तीर्थ, दान तीर्थ, दम तीर्थ, व सन्तोष तीर्थ, ब्रह्मचर्य तीर्थ, नियम तीर्थ, मंत्र जप तीर्थ, मधुर बोली तीर्थ, ज्ञान तीर्थ, धैर्य तीर्थ, अहिंसा तीर्थ, आत्म तीर्थ, ध्यान तीर्थ और शिव स्मरण तीर्थ - ये सभी मानस तीर्थ कहलाते हैं।

मन की शुद्धि सब तीर्थों से उत्तम तीर्थ है। मन-इन्द्रियों के संयम में किया गया स्नान ही वास्तव में सफल है। विषयों की ओर से वैराग्य होना ही मन की निर्मलता है। दान, यज्ञ, तपस्या, बाहर-भीतर की शुद्धि और शास्त्र का ज्ञान भी तीर्थ ही है। यदि अन्तःकरण का भाव भी शुद्ध निर्मल हो, तो ये सभी तीर्थ है। जिसने इन्द्रिय समुदाय को वश में कर लिया, वह मनुष्य जहाँ-जहाँ निवास करता है, वहीं-वहीं उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ प्रस्तुत हैं। जो ज्ञान से पवित्र, ध्यान रूपी जल से परिपूर्ण और राग-द्वेष रूपी मल को धो देने वाला है, ऐसे मानस तीर्थ में स्नान जो करता है, वह परमगति को प्राप्त होता है। शरीर के कुछ भाग परम पवित्र हैं, उसी प्रकार पृथ्वी के भी कुछ स्थान अत्यन्त पुण्यमय माने जाते हैं। जल की शक्ति और मुनियों के अनुग्रह को भी पवित्र तीर्थ माना गया है। इसीलिए भौम और मानस सभी तीर्थों में जो नित्य स्नान करता है, वह परमगति को प्राप्त होता है।

इस प्रकार माघी पूर्णिमा पर स्नान करने से सारे दोष पाप नष्ट हो जाते हैं और अनेकों जन्मों के उपार्जित सम्पूर्ण महापाप भी तत्काल नष्ट हो जाते हैं। सविधि शास्त्रानुसार माघी पूर्णिमा पर तीर्थों में स्नान दान करने का अक्षय फल मिलता है और जन्म-जन्मान्तरों के पापों से छुटकारा भी मिलता है।

- पं. महावीर प्रसाद जोशी

जीवन का सार

प्रवचनांश

कई लोग कहते हैं कि फुर्सत होगी तब सत्संग में आयेंगे। फुर्सत कब मिलेगी जीवन में? फुर्सत तो एक ही दिन मिलेगी जीवन में। मरने के बाद ही फुर्सत मिलेगी, और मरना कोई चाहता नहीं। इस प्रकार जीवन में फुर्सत तो मिलनी ही नहीं चाहिए। फुर्सत मिलने के बाद तो जीवन खत्म हो जाता है।

- सदानंदजी महाराज

आप और हम जितने भी सत्संग में बैठे हैं, हम में से किसी को भी फुर्सत नहीं है। और जिनको फुर्सत नहीं है, वही परमात्मा का भजन, सत्संग करते हैं। कबीरदास को एक मिनट की भी फुर्सत नहीं थी। वे कपड़ा बनाते थे, परन्तु कपड़ा बनाते हुए भी सत-साहिब, सत-साहिब करते थे। रविदास को भी एक मिनट की भी फुर्सत नहीं थी, वह जूती बनाता था और जूती बनाते समय जय श्रीकृष्ण, जय श्रीकृष्ण करते रहते थे।

जिन्दगी का जब तक अन्तिम श्वांस रहेगा, तब तक फुर्सत नहीं होगी। हम तो कहते हैं कि जीवन में फुर्सत मिलनी भी नहीं चाहिए। फुर्सत न मिले तो समय का विभाजन करो।

कई कहते हैं कि महाराज हम आपकी तरह भगवे वस्त्र कैसे पहन लें? हमारे घर हैं, स्त्री है, बच्चे हैं.. सब कुछ है। सत्संग में कैसे आएँ?

कोई भी सन्त यह नहीं कहता कि तुम अपना घर छोड़कर भगवे कपड़े पहन लो, कोई भी सन्त यह नहीं कहता कि तुम अपना कारोबार बन्द कर दो। सन्त तो कहते हैं कि ज्यादा काम करो, अब जितना काम करते हो उससे भी अधिक काम करो। इतना काम करो कि संसार का काम भी चलता रहे और परमात्मा भी मिल जाये। लोक भी ठीक चले और परलोक भी बन जाये।

कई पूछते हैं कि कोई ऐसा आसान उपाय बताओ कि जिससे जल्दी ही हमें परमात्मा मिल जाये। आज का युग है compurterise युग। सो, बटन दबाते ही हमें परमात्मा मिल जाये ऐसा कोई उपाय बताओ। लम्बा-चौड़ा साधन हम कर नहीं सकते।

कलियुग में परमात्मा मिलना बिल्कुल सरल है, यदि आप अपनी दिनचर्या बना लें तो। एक दिन में आठ पहर चौसठ घड़ियाँ होती हैं। आठ पहर का टाईमटेबल ऐसे बनायें -

चार प्रहर धन्धा करो,
तीन प्रहर रहो सोय।
एक प्रहर प्रभु को भजो,
तो मुक्ति सरलता से होय।।

24 घण्टे को आप 8 भागों में बाँट लो। 4 प्रहर में तो आप काम करो। 4 प्रहर के हो गये 12 घण्टे, यानि 12 घण्टे काम करो। सरकार कहती है कि 8 घण्टे काम करो परन्तु सन्त कहते हैं कि 12 घण्टे काम करो। आप कह सकते हैं कि फिर टी.वी. कब देखें, मनोरंजन कब करें? उसके लिए तीन घण्टे -

तीन प्रहर रहो सोय

3 प्रहर मतलब 9 घण्टे। 9 घण्टे में से 6 घण्टे आराम करो। आराम यानि सोना, 6 घण्टे सोओ। 6 घण्टे से ज्यादा सोने वाला बीमार हो जाता है। जो 6 घण्टे से अधिक सोता है, वह कुम्भकरण होता है। उसकी बुद्धि भी सो जायेगी। वह जीवन में कभी सुखी नहीं होगा।

कितना अच्छा टाईमटेबल है। 12 घण्टे काम करो और 6 घण्टे सोओ। जैसे बैटरी को चार्ज करना पड़ता है, उसी प्रकार नींद भी शरीर की बैटरी को चार्ज करने का साधन है, इसलिए नींद में कटौती कभी मत करना। 6 घण्टे तो सोना ही है। शेष 3 घण्टों में क्या करो? मनोरंजन।

अब बताओ, कौन-सा काम शेष रह गया? आधुनिक युग के अनुसार दिनचर्या बनी या नहीं। बारह घण्टे काम करो, 6 घण्टे सोओ और 3 घण्टे मनोरंजन करो। बाकी क्या काम रहा? बाकी काम रहा आत्म-कल्याण का -

एक प्रहर प्रभु भजन करो,
तो मुक्ति सरलता से होय।

24 घण्टे में से 21 घण्टे लगा दें संसार की तरफ और 3 घण्टे लगा दें परमात्मा की ओर, तो हमारे जीवन का कल्याण हो जायेगा। फिर हमें मुक्ति की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है, मुक्ति स्वयं हमारी तलाश करती हुई हमारे दरवाजे पर आयेगी।

इसलिए तीन घण्टे परमात्मा का भजन, सेवा, सत्संग, सुमिरण करके हम अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं।

कोई सन्त यह नहीं कहता कि आप अपना घर-परिवार छोड़ दो। सन्त कहते हैं कि घर में रहो, परिवार में रहो, संसार में रहो, परन्तु संसार में रहकर परमात्मा को मत भूलो। संसार में रहकर काम करो, और काम के साथ-साथ परमात्मा का सुमिरण भी चलता रहे -

सुमिरण सूरत लगाय कर,
मुख से कुछ ना बोल,
बाहर के पट बन्द कर,
अन्दर के पट खोल।

कोई सन्त यह नहीं कहता कि आप अपना घर-परिवार छोड़ दो। सन्त कहते हैं कि घर में रहो, परिवार में रहो, संसार में रहो, परन्तु संसार में रहकर परमात्मा को मत भूलो। संसार में रहकर काम करो, और काम के साथ-साथ परमात्मा का सुमिरण भी चलता रहे।

सुमिरण ऐसा हो कि काम कर रहे हैं तब भी प्रभु का सुमिरण चलता रहे। घर में बैठे हो तब भी सुमिरण चलता रहे, दुकान में बैठे हो तब भी परमात्मा का सुमिरण चलता रहे। इसलिए कहा है कि -

कर से काम करो विधि नाना,
मन रखिये जहाँ कृपा-निधाना।

हाथों से काम करो, परन्तु मन को परमात्मा के श्रीचरणों में रखो। कोई सन्त, कोई भी शास्त्र यह नहीं कहता कि तुम काम नहीं करो। काम नहीं करने वाला तो आलसी होता है और आलस सबसे बड़ा भार है संसार में। हाथ से काम करते रहो और परमात्मा में ध्यान लगाओ। संसार के काम तो करें परन्तु अन्दर की वृति हो परमात्मा के पास। परमात्मा के चरणों में। तो आपका कल्याण हो जायेगा। इसलिए सत्संग, सेवा और सुमिरण - इन तीनों को अपनाकर आप अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं। यही जीवन का सार है।

विश्वास

मंगली हैं तो
पीपल में चढ़ाएँ दूध-शक्कर

वैसे तो काफी लोगों का विवाह सही समय पर बिना किसी परेशानी के हो जाता है, लेकिन कुछ लोगों की शादी में कई समस्याएँ आती हैं और देर भी होती है। इसके पीछे कई कारण रहते हैं, कुंडली में मंगल दोष भी इनमें से एक कारण है।

ज्योतिष के अनुसार, शादी में विलंब होने की वजह मंगल दोष भी हो सकता है। जो लोग मंगली होते हैं, उनकी शादी या तो बहुत जल्दी हो जाती है या बहुत देर से होती है। जिन लोगों का विवाह मंगल दोष के कारण नहीं हो पा रहा हो, उन्हें ज्योतिषीय उपचार करना चाहिए।

मंगल दोष का प्रभाव कम करने के लिए एक उपाय बताया जाता है कि प्रति मंगलवार पीपल के पेड़ को दूध में शक्कर मिलाकर अर्पित करना चाहिए। ऐसा करने से मंगल के दोष भी समाप्त होते हैं और जल्दी ही विवाह के योग भी बनते हैं।

मंगल को प्रसन्न करने के लिए मंगलदेव के निमित्त भात पूजन भी कराया जाना चाहिए। मंगल दोष दूर करने के लिए उज्जैन में मंगल देव के जन्म स्थान पर भात पूजन कराया जाता है। इस पूजा से सभी प्रकार के मंगल दोषों का निवारण हो जाता है और जीवन की कई समस्याएँ दूर हो जाती हैं। इसके साथ ही प्रति मंगलवार पीपल के पेड़ को शक्कर मिले हुए दूध से सींचना चाहिए और पीपल की परिक्रमा करनी चाहिए।

कहानी

दादी का मटका

गतांक से आगे-

बहुत देर तक दादी के साथ घूम कर जब भी लौटती, तो बचपन में सुनी कहानियाँ और बातें याद आतीं। वैसे तो कहा जाता है कि कर्म ही सब कुछ होते हैं, फल की इच्छा के बिना काम करो। इतिहास और धार्मिक ग्रंथ इसके गवाह हैं। हजारों उदाहरण भी मिलते हैं, पर आज कर्म से पहले फल और लाभ का अनुमान लगाया जाता है। दादी कहा करती थी, ''कृषांगी! जानती हो, कर्म अमोघ शक्ति है। नियति से भी ऊपर, जो भाग्य और हस्तरेखाओं को भी बदल सकते हैं।'' मैं भी सोचती थी कि आँखें मूंदकर भगवान को फल और जल चढ़ाना या चढ़ावा चढ़ाना उसी तरह व्यर्थ है जैसे बिना कर्म और मेहनत किये अफसर की चापलूसी करना या उसके इशारों पर नाचना। अपने जीवन की राह तो हर व्यक्ति को अपने आदर्शों और मूल्यों से स्वयं तैयार करनी पड़ती है। मुझे याद है, दादी मंदिर और स्कूल से लौटकर पहले खेतों पर जाती थीं, फिर सब मजदूरों की झोपड़ियों में जातीं, उनका सुख-दुख बाँटतीं और जिसको जिस मदद की आवश्यकता होती, वह वहीं पर देतीं। वहाँ से लौटते हुए वह हवेली के पिछले कमरों में बने अनाथ आश्रम में जातीं, बच्चों का हालचाल पूछतीं, कहानियाँ सुनातीं, उन्हें सुविधाएँ जुटातीं। आश्रम की देखभाल के लिए रखे नौकरों और सहायकों से हिसाब लेतीं। इस उमर में भी वह इतनी व्यस्त थीं कि हैरानी होती थी।

दादीजी ने दादाजी की मृत्यु के बाद वसीयत भी बना रखी थी, क्योंकि वह जानती थीं वसीयत के लिए कुछ भी हो सकता है और फिर दुश्मनी की तो कोई सीमा ही नहीं। पर वह बार-बार सबसे कहती जरूर थीं कि रिश्तों से बढ़कर पैसा या जमीन-जायदाद नहीं होती। आपसी प्यार और सम्मान ही रिश्तों को एक नया धरातल देते हैं। दादी ने बड़ी समझदारी से तीनों बच्चों का हिस्सा समान रूप से बाँट रखा था और अपना हिस्सा वह स्कूल और आश्रम को देना चाहती थीं। जो कुछ भी उनके पास था, सबका आधा उनका था। ऐसा दादाजी फैसला कर गये थे कि दादी जिस भी बच्चे को जो भी देना चाहें, दे सकती थीं। दादी ने समय रहते ही फैसला कर लिया था। कोर्ट में रजिस्टर्ड विल तैयार रखी थी। वह अपना काम आप करना चाहती थी, इसी कारण किसी बच्चे से सलाह या मदद नहीं माँगी थीं।

दादी मुझसे कभी-कभी बातें साझा करती थीं, इस विश्वास से कि यह बात तीसरे तक नहीं जायेगी। वैसे हमारे घर में तो संबंध अब पहले जैसे हैं ही नहीं। हमारे जीवन में- चाहे वह मेरे माता-पिता थे, चाहे चाचा-चाची या बुआ-फूफाजी, उनके जीवन का केन्द्र बिन्दु परिवार नहीं रह गया था। वह पूरा का पूरा बाजारवादी था। हमारे यहाँ रिश्तों और मानवीय संबंधों को उत्सवों की तरह नहीं संभाला या मनाया जाता था, जैसे दादा-दादी के समय में था। आज की सोच और समय ने रिश्तों को प्रभावित किया है। तभी तो दादी को देखने या उसके पास कुछ दिन रहने को न कभी चाचा का परिवार आया, न बुआ का। सारे साल का अनाज समय से सबको पहुँच जाता है, और क्या लेना-देना। दादी कभी शिकायत भी नहीं करतीं। शायद शिकायत जैसे व्यर्थ काम के लिए उनके पास समय ही नहीं है। बस उन्हें दुख होता है कभी-कभी कि कहाँ जा रही है आज के मानव की सोच, जहाँ खून के सम्मानित रिश्तों की गरिमा धुंधली पड़ गई है। सभी रिश्तों की बुनियाद विश्वास, प्यार और सम्मान पर टिकी होती है, पर आज ऐसा रहा ही नहीं, मित्रता तो दूर की बात है। आज के रिश्ते पैसे और सुविधा पर टिके हैं। व्यस्तता तो एक बहाना है।

शाम को मैं दादी के साथ बैठकर पूरे मन से लोकगीत गाती। मेरी आवाज अच्छी थी और नाचना-गाना मुझे बहुत भाता था। विदेश में भी पढ़ाई करते जब मैं थक जाती, तो घंटों अकेली बैठकर गाती और किसी न किसी भारतीय संगीत की धुन पर नाचती। जब भी कभी विदेश में कोई भारतीय त्यौहार या उत्सव मनाया जाता, तो मित्र मुझे याद करते और पूरी सुविधा भी प्रदान करते। मैं ऐसी रौनक लगाती कि सब हैरान रह जाते और हमेशा पूछते, ''कृषांगी! तुम्हें पढ़ाई के साथ यह सब करने का समय कैसे मिलता है और हाँ, तुम्हें यह किसने सिखाया?'' मैं खिलखिलाकर हँसती और कहती, ''मेरी दादी ने। मेरी दादी की सोच तो तुम सबसे आगे है। वे मेरी गुरु हैं और बहुत बड़ी जीवन और रिश्तों की कलाकार भी।''

गाँव में जब भी दादी के पास रहने जाती, तो दादी मुझे सब बड़े-छोटों में मिलवातीं। हर दूसरा व्यक्ति कहता, ''तुम्हारी दादी की क्या बात है, उनकी रौनक के बिना तो कोई कार्य संपन्न ही नहीं होता था। बहुत बढ़िया इन्सान होने के साथ एक कलाकार भी हैं और गाँव में सबसे अधिक पढ़ी-लिखी बहू भी हैं।''

इस बार जब मैं दादी के पास रहने गई, तो दादी थोड़ा अस्वस्थ थीं। बोलीं, ''कृषांगी! मैंने तीन-तीन बच्चों को जन्म दिया, तीन बार यह पेट मटके की तरह फुलाया। अपने फूले हुए मटके को पाल-पोस कर हर बार प्रार्थना की कि मेरा कोई बच्चा तो मेरे जैसा हो, पर एक भी मेरे संस्कार नहीं ले पाया। सभी दुनियादारी और पैसे को प्राथमिकता देने वाले हैं।''

दादी ने मुझे स्टोर रूम खोलने को कहा, वहाँ वह घड़ा पड़ा था, जिसे दादी ने बचपन से लेकर जवानी तक बजाया था। घड़ा बजाकर जब दादी लोकगीत गातीं, तो सारे वातावरण में एक करुणा की स्वर लहरी गूंज उठती। मैंने भी बचपन में और जवानी में उसे बजाया था। दादी ने बड़ी मेहनत से मुझे उसकी शिक्षा दी थी। आवाज तो मेरी वैसे भी दादी जैसी थी, पर विदेश जाने पर वह छूट-सा गया था। आज उसे देख सारे शरीर और मस्तिष्क में फनफनाहट-सी होने लगी। दादी ने पास आकर मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोलीं, ''आज बजाओ न!'' मुझे लगा मैं भूल गई हूँ, पर दादी के कहने पर अपनी सूती चुन्नी का गोला बनाकर घड़ा उस पर स्थापित कर दिया और अंगुली में दादी ने एक मोटी-सी चांदी की अंगूठी ताल और लय को थपकी देने के लिए पहना दी।

बस फिर क्या था! जैसे ही दादी का आशीर्वाद और प्यार भरा हाथ मेरे सिर पर घूमा कि मैं कुछ ऐसे बजाने लगी, जैसे कभी भूली ही नहीं थी। मैंने दादी का मनपसंद लोकगीत ऊंची आवाज में गाया तो दादी के पैर भी थिरकने लगे। वह उठकर उस लय पर नाचने लगीं। पहले दो मिनट कमजोर-सी डगमगाने लगीं, पर फिर कहाँ से शक्ति आई कि वह शिव तांडव करने लगीं। मुझे उन्हें देख-देखकर घबराहट हो रही थी, पर वह रुकने का नाम ही नहीं ले रहीं थीं। सारा गाँव मेरी आवाज और उनका आलौकिक नृत्य देख-देखकर हैरान हो रहा था।

कुछ देर बाद वह जमीन पर बैठ गईं। बहुत थक गई थीं। मैंने गोद में उनका सिर रखा, किसी ने दौड़कर पानी पिलाया, पंखे की हवा की और सरपंच ने जल्दी डॉक्टर को बुलाया, पर वह शांत हो चुकी थीं। मुझे ऐसे निहार रही थीं जैसे कोई बच्चा अपनी माँ को देखता है।

सबको उसी समय खबर की, सब पहुँच भी गये। दादी ने किसी को स्मरण नहीं किया, किसी को कुछ करने के लिए नहीं कहा।

थोड़ी देर के बाद तीनों भाई-बहन स्टोर में उनकी अलमारी में विल ढूंढ रहे थे। विल मिली, पर सब उदास और निराश थे, क्योंकि माँ ने अपना हिस्सा स्कूल और आश्रम को दिया था। सब क्रियाकर्म करने के बाद लौटते हुए किसी को माँ के मरने का इतना दुख नहीं था, जितना कि आधा हिस्सा किसी और के पास चले जाना का था। जब वह माँ के मरने का सोचकर आ रहे थे, बहुत कुछ पा जाने की खुशी थी, पर लौटते हुए आधा खो देने का दुख था।

वहाँ से लौटते हुए मैं अपना सब खोकर रंक हो गई थी और इस बार जब विदेश गई तो कभी लौटकर नहीं आई, कभी नहीं। दादी का पुराना मटका मैं बस साथ ले गई थी, ढेरों आशीर्वादों सहित।

(समाप्त)

- डॉ. इन्दु बाली